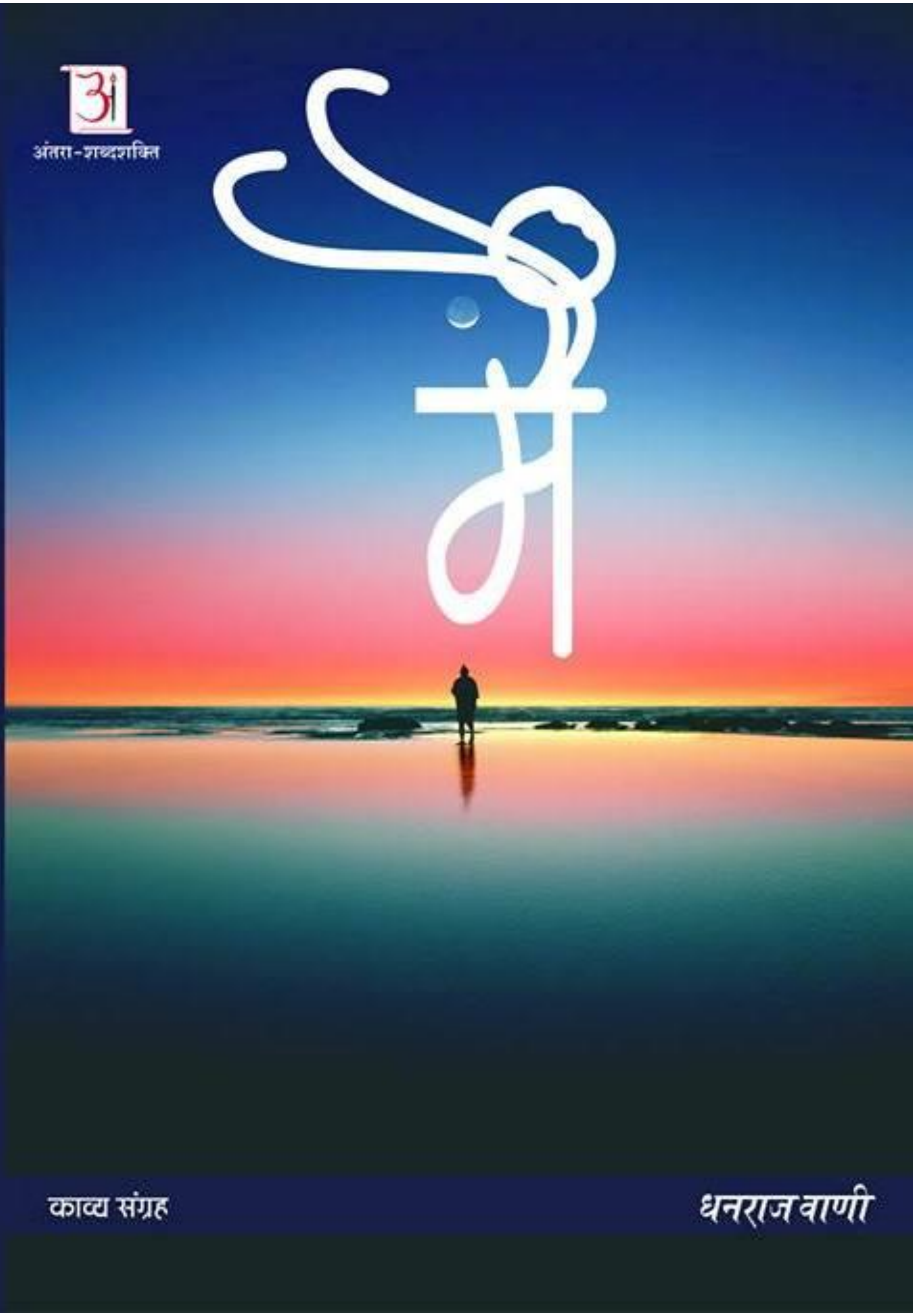
अंतरा-शब्दशक्ति
मैं
काव्य संग्रह
धनराज वाणी

मैं,..

(काव्य संग्रह)

धनराज वाणी ’अर्पण

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-86666-33-8

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ - धनराज वाणी
मूल्य - ४०.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Main... by Dhanraj Vani

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

मेरी कलम से......

सभी पाठक मित्र बंधुओं का सादर अभिन्दन, सर्व प्रथम मैं उत्साहित हूँ, मेरी रचनाओं का प्रथम संस्करण; **मैं.......**' प्रकाशित हुआ है, मैं मातृभाषा.कॉम और अन्तरा-शब्दशक्ति को धन्यवाद प्रेषित करता हूँ जिसने अंचल मे रहने वाले रचनाकारों तक पहुँच कर उनकी प्रतिभा को निखारने में अपनी अहं भूमिका निभाई है। यह संस्था हिन्दी भाषा का व्यापक प्रचार-प्रसार कर 'हस्ताक्षर बदलो' अभियान से लोगों को जोड़ कर हिन्दी की सभी विधाओं का लेखन प्रकाशित कर श्रेष्ठ लेखन को जन मानस तक पहुँचाने मे सफल हुई है।

मैं.......' प्रथम संस्करण प्रकाशित हुआ है, **मैं.......** अर्थात **स्वयं** की ओर इगिंत करता है। इस संस्करण में सरल व सहज भाषा में लिखी गई कुल बारह रचनाओं को सम्मिलित किया गया है जो **मैं.......** अर्थात **स्वयं** की भावनाओं व पीड़ा को जनमानस के स्मृतिपटल पर रख कर चिंतन करने पर मजबूर करती है। पुन: आप सभी पाठकों व प्रकाशक संस्था का आभार व्यक्त करता हूँ। सादर प्रणाम, जय हिन्द।

धनराज वाणी 'अर्पण'

अनुक्रमणिका

1. विज्ञान से ईश्वर तक 5
2. माँ की आस 6
3. प्रभु के मन की पीड़ा 7
4. क्या-क्या तुम साफ करोगे 8
5. माँ गंगा की पीड़ा 9
6. नवजात की पीड़ा 10
7. माँ 11
8. रोशनी की गुहार 12
9. शहीद की भावना 13
10. मुझे मत मारो 14
11. लौटा दो मेरा बचपन 15
12. प्रेमी का खत 16

विज्ञान से ईश्वर तक

चाँद तक जाकर आ गये
सूरज तक तुम जा न सके
धरती को तुमने नाप लिया
लहरों की गिनती बता न सके
चीर दिया मानव शरीर
खूँन अब तक बना न सके
कितने दीप जलाये तुमने
नेत्र-ज्योति दिला न सके
खोज तुम्हारी अब भी अधूरी
मृत्यु पर विजय पा न सके
है,कोई अब भी सृष्टि में
अब तक पता लगा न सके
कुछ काम किये तुमने
कुछ उसके भरोसे छोड़ दो
पाले हैं जितने भरम
सारे भरम तुम तोड़ दो
मान जाओ दिव्यशक्ति को
आगे कदम बढ़ा लो अब
जो सृष्टि चला रहा है
अस्तित्व है,स्वीकारो अब
मत बनो नास्तिक
उससे आगे कोई नहीं है
कितने ही पन्ने पलटो तुम,
उससे बड़ा कोई नहीं हैं।

माँ की आस

बैठी हूँ मैं लगाए, मुन्ना कब घर आयेगा
थक गई हैं बूढ़ी आँखे, कब तक मुझे सतायेगा
बड़ा नटखट था बचपन में, सरपट दौड़ लगाता था
भागी-भागी मैं तेरे पीछे, तू फिर भी निकल जाता था
देखकर भूखा तुझको मुन्ने, मैं भूखी ही सो जाती थी
उठकर रोता रात को, मैं तुझको दूध पिलाती थी
उठकर बड़े सबेरे, तू घर से निकल जाता था
पकड़कर लाती थी मैं, तब झूँठी कसमे खाता था
छोड़कर न जाऊँगा मम्मा, तुझको कभी अकेले
आ जाऊँगा मम्मा मेरी, दिन ढलने से पहले
बड़ा हो गया मुन्ना मेरा, अब भी बहुत सताया है
ढल गये कितने ही सूरज, पर लौटकर नहीं आया है
तब भी भूखी सोती थी मैं, अब भी राह तांक रही हूँ
बहुत दिन हो गये बेटा, भूख में दिन काट रही हूँ
गुंजती थी किलकारी, अब आँगन सूनसान हुआ
लेकर लाठी का सहारा, मन मेरा भी परेशान हुआ
कहते हैं पड़ोसी अब, बहू-बेटा नहीं आयेंगे
खा लो माजी खाना अब, यूं दिन कैसे कट पायेंगे
कहती हूँ उनसे मैं भी, मुन्ना जरुर आयेगा
देखूँगी उसकी थाली में रोटी, पेट मेरा भर जायेगा।

प्रभु के मन की पीड़ा

तुमने तो मुझको को,सोने के मुकुट पहना दिये
चढ़ाकर चरणों में दौलत,सारे फर्ज भुला दिये
मैंने धरती पर आकर,वनवासी चोला पहना था
जाकर कुटिया में,भीलनी का बेर चखा था
या मैं आया था, वन-वन रोज भटकने को
बनकर ग्वाल-बाल गायों की सेवा करने को
या फिर लुटती,द्रोपदी की लाज बचाने को
सीता जैसी पतिव्रता को,रावण के हाथो छुड़ाने को
मैं कलयुग में भी आया था,फटा कपड़ा लपेटकर
बाँध सर पर दुपट्टा,भूखे की थाली देखकर
जाकर उनके घर,मैंने खाना पकाया था
देख दिये में तेल नहीं,पानी से दीपक जलाया था
तुमने तो दर पर आकर,माथा अपना टिका दिया
चढ़ाकर चरणों में दौलत,इसे ही फर्ज समझ लिया
जाकर देखो कुटिया में,सबरी राह तांक रही है
फटे वस्त्रो में कोई,लाज बचाते भाग रही है
या फिर लूला- लंगड़ा, दर पर मेरे पड़ा हुआ है
या फिर कोई बचपन,कटोरा लिया खड़ा हुआ है
अब दर्द बाँटने, मैं धरती पर नहीं आऊँगा
बन जाओ तुम मसीहा, मैं तुम पर कृपा बरसाऊगाँ ।

क्या-क्या तुम साफ करोगे

कहाँ-कहाँ फैली है गंदगी,
क्या-क्या तुम साफ करोगे,
सड़क, गली, मोहल्ले और,
बेटी से भी इन्साफ करोगे,
बीड़ी, तम्बाकू व शराब, या हो सिगरेट का धुआँ,
सबके सब हैं,हानिकारक, कहलाते मौत का कुआँ,
मौत वह नहीं जो,
आसानी से आ जाती है,
मौत वह है जो
तड़पा-तड़पा कर खा जाती है,
होता शरीर का नाश, परिवार पूरा टूट जाता है,
टूटी हुई पंखुड़ियों सा, घर पूरा बिखर जाता है,
एक नशा और भी है,
मैं तुम्हें बतलाता हूँ,
मोबाईल, इन्टरनेट की गंदगियाँ, मानसिक विकृति लाती है
होते है फिर कुकर्म, क्यों बात समझ नहीं आती है
बचपन कच्ची मिट्टी सा हैं
जैसे ढालो ढल जायेगा
या होगा मंदिर का कलश
या महफिलों में टकरायेगा ।

माँ गंगा की पीड़ा

बहती मेरी कल-कल धारा, श्वेत रंग मे रंगी हुई सी
है पवित्रता समेटे हुऐ, फिर भी देखो ठगी हुई सी
करते हैं पवित्रता की बातें, मुझको गंगा माँ कहते हैं
खाते हैं सौगंध मेरी, गर्व से सीना फुलाते हैं
मैं तो आई थी पत्थरो से, सर अपना टकराकर
राह के पर्वतों के सीने पर, रास्ता अपना बनाकर
उतरी थी आकाश से मैं, शिव की जटा में समाई थी
पीड़ा तुम्हारी देख न पाई, इसलिये धरती पर आई थी
आस्था के नाम पर, सर मेरा झुका डाला
माथा टेका मेरे तट पर,मुझको मैंली कर डाला
हाँ,निर्लज्जो तुमनें तो,मेरा ही सीना फाड़ दिया
ओढ़ाकर कफन मेरे बेटों को,मेरी ही गोदी में डाल दिया
तुम क्या जानो माँ की वेदना, हृदय में दर्द समायें हैं
मेरा सीना चीरकर देखो, कितने घाव लगाये हैं
रोज मिलाते ‘केमिकल’, पहनाते रोज गले में माला
फूलों से करते मेरा स्वागत, प्रदूषित करते मेरी जलधारा
अब तक सहा,अब न सहूँगी, पार लगाई तुम्हारी नैया
धोकर पाप तुम्हारें देखो, मैंली हो गई तुम्हारी मैंया
आज दु:खी है गंगा माँ,मन उसका बेटों से हारा
आँसू उसके बहते हैं, जैसे गंगा की अविरल धारा ।

नवजात की पीड़ा

झाड़ियों में छोड़ मासूम को, माँ ने जैसे ही नजर हटाई
बिलख कर थामा माँ का दामन, फिर उसने आवाज लगाई
कितने दर्द सहे कोख में, माँ तुमने है मुझको पाला
पल भर में किया आँचल से दूर, माँ यह क्या कर डाला
रोते-बिलखते विराने में, जब छोड़कर मुझको तू जायेगी
शर्मशार होगी माँ की ममता, लज्जा मुझको भी आयेगी
इस वीराने जंगल में कीड़े-मकोड़े काटेंगे
हो सकता है जंगली कुत्ते तन को मेरे चाटेंगे
छिन्न-भिन्न होगा तन,क्या मन तेरा विचलित न होगा
मैं हूँ तेरी कोख का अंश, माँ का फर्ज लज्जित न होगा
हो सकता हैं कोई राहगीर हाथ मेरी ओर बढ़ा दे
दे-दे गोदी का सहारा अपने घर में मुझको पनाह दे
नहीं मिलेगी माँ की ममता आँचल तेरा सूख जायेगा
तरसूगाँ तेरे दूध को, दूध तेरा कहाँ मिल पायेगा
लेकिन, समझ रहा हूँ मैं भी, शायद तेरी भी मजबूरी है
फिर महाभारत की कुंती ने, बना ली कर्ण से दूरी है
जाते-जाते मुझको माँ, मेरा दोष बता जाना
नव माँ तक रहा कैद में, उसका हिसाब चुका जाना
लेकिन इतना समझ ले, बेटे से माँ दूर नहीं हो सकती
मेरी पीड़ा को जो समझे, वह माँ मजबूर नहीं हो सकती ।

माँ

क्या माँ इंसान है
नहीं, माँ भगवान है
दुनिया में दूसरा कोई नहीं
माँ ही हमारी पहचान है
क्या राम, क्या रहीम
क्या नानक, क्या कबीर
जिसने भी दुनिया को कुछ दिया है
उसने भी माँ की कोख से जन्म लिया है
माँ में ममता है, माँ में सहजता है
माँ में क्षमा है, माँ में धीरजता है
माँ सीता है, माँ गीता है
माँ आदि है, माँ अन्नत है, माँ गुरुग्रंथ है
माँ त्याग की प्रतिमूर्ति और धरा का नाम है
माँ ही वेद और पुराण है
सच पूँछो तो दोस्तो
माँ ही बाईबल और कुरान है
माँ, माँ नही कुदरत का करिश्मा है
माँ हर बेटे का सपना है
माँ की कोई जाती, न धर्म, न वर्ग है
माँ आखिर माँ है, माँ के चरणो मे स्वर्ग है।

रोशनी की गुहार

मैं छोटा बच्चा हूँ, किसी के सहारे चलता हूँ
अंधकार है चारो ओर, दुनिया इसे ही समझता हूँ
बचपन में मुझको, माँ ने दूध पिलाया,
माँ के आँचल की छाया, बस इतना ही समझ पाया
न देखी मैंने माँ की सूरत, न मैंने उसको पहचाना
माँ की आँखो से देखा, उसका कहा ही सच माना
लेकिन देखो अब, माँ का सहारा भी छूट गया
पिता रूठे थे बचपन में, माँ का आँचल भी रुठ गया
नहीं है मेरी दोनो आँखे, न मुझको है कोई पहचान
लाठी बनी सहारा अब, दे-दे मुझको कोई आँखो का दान
ताकि मैं इस सृष्टि के ओर भी नजदीक आँऊ
न देखी माँ की सूरत, दुनिया उसकी देख पाँऊ
माँ कहती है,खूश्बू से, फूल अधिक सुन्दर है
कैसे बताऊँ मैं, फूलों से भी ज्यादा, सृष्टि अतिसुंदर है
याद है माँ की बातें, माँ मेरी सच कहती थी
मैं भी देखूँ वह दुनिया, जिसमें माँ मेरी रहती थी
आओ, मित्रो मिलजुलकर ऐसा कोई काम करें
आँखे दें किसी नेत्रहीन को, आँखे अपनी भी दान करें
नश्वर है यह शरीर, किंतु नष्ट नहीं हो पायेगा
मरने के बाद भी, काम किसी के आयेगा।

शहीद की भावना

तिरंगे में लिपटा था वह, आँखे सबकी नम थी
मौत से भी लड़ लेता, किन्तु जिंदगी कम थी
जैसे ही चेहरे से तिरंगा, माँ ने जब हटाया
देखकर अपनी माँ को,धीरे से वह मुस्कुराया
देख ले माँ तू भी,.तिरंगे का कफन ओढ़ा है
सीने पर खाकर गोली, तेरे बेटे ने दम तोड़ा है
चाहता तो आ जाता मैं, मैंदाने-ए-जंग छोड़कर
क्या गले लगा लेती तू, जैसे आज आई दौड़कर
याद है अब भी माँ, तूने तिलक लगाया था
मुन्नी ने भी डिब्बा, चाकलेट का बुलाया था
दरवाजे पर खड़ी थी वह, मुझसे उम्मींद लगाऐ थी
मेने भी सिंदूर से, माँग उसकी सजाई थी
प्यारी बहना भी मेरी, राखी लेकर खड़ी थी
याद है अब भी वह, कितनी सुहानी घड़ी थी
अब तक नहीं मिटाये तूने, मेरे कदमों के निशान को
मैं भी नहीं भूला हूँ माँ.. तेरी मिट्टी की शान को
बगल में है चाकलेट.... मुन्नी को खिला देना
लौटकर आऊँगा..........बहना को बता देना
किये थे जितने वादे,..... वादे तोड़कर आया हूँ
अपने कदमो की आहट,सीमा पर छोड़कर आया हूँ ।

मुझे मत मारो

मुझे मत मारो, मुझे मत मारो
सुन लो मेरी करुण पुकार
मैं हूँ तुम्हारा अंश
अब कर लो मुझसे प्यार
क्या मांगा मैंने तुमसे
मैंने क्या बिगाड़ा है
बिना कसूर के तुमने
मुझको क्यों मारा है
जो तुम खाती हो
मैं भी तो वही खाती हूँ
नींद तुम्हे जब आती है
मैं भी तो सो जाती हूँ
वक्षस्थल के पास हूँ
फिर भी वक्ष से दूर हूँ
व्याकुल हूँ भूख से
देखो कितनी मजबूर हूँ
तन पर मेरे वस्त्र नहीं हैं, फिर भी उम्मींद लगाऐ हूँ
बंद कमरे में कैद हूँ, फिर भी सपने संजोए हूँ
देखने को यह दुनिया, बेटी तेरी निहार रही है
कान लगाकर सुन ले माँ, बेटी तेरी पुकार रही है ।

लौटा दो मेरा बचपन

लौटा दो मेरा बचपन....बचपन की वो यादें
लेकर माथे पर मटकी, माँ पानी भरती थी
बजती थी शाला की घंटी, माँ कान पकड़ती थी
सुनकर मम्मा की डाँट, सरपट दौड़ लगाते थे
पकड़कर ढीली नेकर, शाला में पहुँच जाते थे
होती शाला की छुट्टी, घर में ठहर नहीं पाते थे
फेंक किताबें अपना बस्ता, मस्ती खूब लुटाते थे
हाथो में ले गिल्ली डंडा, या होती पतंग की डोर
कँचे होते थे जेबो में, कितना मचाते हम शोर
कभी खेलते पकड़पाटी, कभी चलाते लटटू गोल
कभी खेलते छुपमछाई, कभी बजाते बाँसुरी,ढोल
चारो ओर हरियाली थी, हवा भी ठंडी चलती थी
चाँदी सा नदी का जल, कल-कल नदी बहती थी
चिडियाँ चहकती पेड़ों पर, भंवरे गुन-गुन गाते थे
होती रिमझिम बारिश, उसमे भीगा करते थे
पेड़ों की वह शीतल छाया, कितनी लुभावनी लगती थी
बचपन की वह सारी यादें, मुझको मनमानी लगती थी
कितना अच्छा था वह, सब कुछ अपना लगता था
लेकिन अब लगता है, बचपन तो एक सपना था ।

प्रेमी का खत

कितना अच्छा लगता था, जब खत तुम्हें लिखा करता था
रंग-बिरगें पन्नो पर, दिल के जज़बात लिखा करता था
प्यार मोहब्बत कशिश की, हर बात लिखा करता था
फूल-बगियन उपवन की, हर मुलाकात लिखा करता था
स्वप्न सुंदरी, ख्वाबों की रानी, मेरी मुस्कान लिखा करता था
धड़कते दिल की तीरों वाली, तस्वीर बनाया करता था
भेजा करती थी खत तुम, रख अपनी किताबों में
लिख देती थी नाराज हूँ, नींद नहीं आती थी रातों में
रात निकल जाती थी, कितना तुम तड़पाती थी
लिये गुलाब हाथों में, तुम तब भी नहीं आती थी
निकलता तुम्हारी गली से, दीदार तुम्हारा हो जाए
पाकर होठो की मुस्कान, धड़कन दिल की रुक जाए
याद बहुत आती है अब भी, पर बात बहुत पुरानी है
किंतु खत ही अच्छा था, बात दिल ने भी मानी है
दिल की हर धड़कन खत में, रहता था इंतजार
मिलने की थी तड़पन, दिल मे बसा रहता था प्यार ।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - धनराज वाणी

जन्म - 31 मार्च 1970, जोबट

पत्नी - श्रीमती कविता वाणी

शिक्षा - एम.ए., बी.एड. (समाजशास्त्र)

पता - जोबट, जिला- अलीराजपुर (म.प्र.)

कार्यक्षेत्र - शिक्षक

रुचि - वीर रस, देशभक्ति, सामाजिक चिंतन के विषयों पर कविताऐं एवं लेख।

अनुभव - बाल्यकाल में कविता, भाषण एवं वादविवाद। अखिल भारतीय मंच, सोशल मीडिया व

प्रकाशन आकाशवाणी इंदौर से काव्य गोष्ठी का प्रसारण

सम्मान - अर्पण कला मंच जोबट एवं आचमन मंच जोबट द्वारा साहित्यिक उपलब्धियों पर सम्मान।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी।

मातृभाषा
www.matrubhashaa.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, सम्पर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

मूल्य- 40/-